विश्वामित्र के राम

लेखक : डा0 श्रीराम सिंह
प्रकाशक : आर्यावत शोध विकास संस्थान, बलिया (उ0प्र0)
ISBN : 978-81-936815-2-7
समीक्षक : **डा० सुमन सिंह,**
सह आचार्य, अंग्रेजी विभाग
पी0पी0एन0 (पी0जी) कालेज,
कानपुर, मो.- 9335307414

प्रस्तुत पुस्तक, भारतीय उपमहाद्वीप के लोकनायक श्री राम की पौराणिक कथा पर आधारित उपन्यास है। यह उपन्यास राम कथा के पौराणिक प्रसंगों में समसामयिक महत्त्व के बिन्दुओं को, आधुनिक समाज के पाठकों के लिए उपलब्ध करता हुआ, राम चन्द्र को एक आज्ञाकारी शिष्य एवं विश्वामित्र को एक ऐसे गुरू के रूप में दर्शाता है, जो राम जैसे महानायक का पथ प्रदर्शक भी है और जन कल्याण कारी युगख्रष्टा भी है। यह उपन्यास आज के उच्च शिक्षा से जुडे हुए शिक्षकों के लिए पथ प्रदर्शक का कार्य कर सकती है। ऐसी पुस्तकों का संग्रह विश्वद्यालयों के Academic Staff College में होना चाहिए ताकि प्रशिक्षणरत शिक्षक अपनी सामाजिक भूमिका को समझकर शिक्षण को व्यापक एवं समाजोपयोगी बना सकें।

विश्वामित्र सामाजिक न्याय स्थापित करने, स्त्रियों की सामाजिक स्थिति सुधारने एवं विध्वंशकारी शक्तियों (Terrorist Organizations) का दमन करने हेतु, राम को उपयुक्त समझकर, राम को उसके पिता से मांगते हैं। राम को ज्ञान एवं शक्ति से परिपूर्ण करके, युग की विसंगतियों से अवगत कराते है। राक्षसों से ;षियों एवं जन साधारण को मुक्त कराने हेतु प्रतिज्ञा लेते है। तद्पश्चात स्त्री दुर्दशा की ओर ध्यानाकर्षण हेतु वे अहिल्या के प्रसंग को राम के समक्ष रखकर स्त्रियों को सामाजिक न्याय दिलाने का प्रयन्त करते हैं ।

इस उपन्यास में सीता विवाह के प्रसंग को भी एक सुन्दर तरीके से समसामयिक सामाजिक समस्या से जोड़ा गया है। सीता का कोई गोत्र नहीं; जन्म का पता नहीं है तो केवल उसके गुण हैं जन नायक राम के मुख से निम्नलिखित अभिव्यक्ति; आज के आधुनिक परिप्रेक्ष्य में देखी जा सकती 'यह तो विचित्र स्थिति है गुरुदेव, राम के मुँह से अनायास निकला। 'एक असाधारण सुन्दर, गुणवती, महिमामयी राजकुमारी के साथ विवाह के लिए कोई आर्य राजकुमार सामने नहीं आया। मनुष्य किसा जाति, धर्म और गोत्र में पैदा हुआ, इसमें उसका क्या दोष है? यदि ऐसे किसी व्यक्ति के साथ भेद भाव किया जाता है तो यह उसके साथ घोर अन्याय एवं अमानुषिक कार्य है गुरूदेव। यह तो मानव सम्मान के सर्वथा प्रतिकूल है। और किसी व्यक्ति को बिना किसी दोष के दण्डित करने के समान है।'' (पृष्ठ सं0-93)

इसी प्रकार एक और स्थान पर राम अपनी प्रतिक्रिया गुरुदेव को बताते हुए, सीता की इच्छा का भी महत्त्व रखते हैं- ''दूसरी बात है कि सीता की इच्छा के बारे में भी जानकारी होनी चाहिए।'' (पृष्ठ सं0-95)

राजा दशरथ के तीन विवाहों को विश्वामित्र अनुचित ठहराते हुए राम को एक विवाह की न्यायसंगिता का बोध कराते है। इस प्रकार गुरू राम को प्रत्यक्ष रूप से परिस्थितिपरक ज्ञान देते हुए, उन्हें नायक से एक महानायकत्व की ओर अग्रसर करवाते हैं। ।

जहाँ यह उपन्यास शिक्षकों के लिए उपयोगी है वहीं स्नातक/स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के लिए भी यह पुस्तक अनुकरणीय है। राम का जीवन दर्शन, उनके पिता दशरथ के जीवन मूल्यों से कदाचित भिन्न है, फिर भी पिता पुत्र में स्नेह एवं सम्मान की कोई कमी नहीं दिखती। राम का आचरण, सभी मानवीय संबन्धों पर आदर्श ही उतरता है किन्तु समाज में व्याप्त अन्याय को मिटाकर न्याय व्यवस्था स्थापित करना उनकीप्राथमिकता है।

लेखक की भाषा शैली उपयुक्त एवं सुगम्य है, कथावस्तु पूर्व परिचित होकर भी रोचकता नही खोती; पात्रों का चित्रण देवत्व के धरातल पर नहीं बल्कि मानवीय स्तर पर किया गया है। आधुनिक पीढ़ी के लिए एक पौराणिक कथा को सुलभ एवं रोचक बनाती हुई इस पुस्तक को मैं एक महान कृति के रूप में देखती हूँ।

◆◆◆